B.A Part 2
Paper IIIrd

By- Dr. Shailesh Kumar
deptt. of economics
Raja Singh College Siwan'

2.7.20

भारत में मूल्य तल में वृद्धि के कारण :-

1950-51 के पश्चात भारत में मूल्यों के स्फीतिजनक वृद्धि को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारणों में निम्नलिखित प्रधान कारण रहे हैं।

(1) जनसंख्या का बढ़ता हुआ दबाव (Growing pressure of population)

हमारे देश में 1951 के बाद जनसंख्या में निरंतर रूप से और तीव्र गति से वृद्धि प्रारंभ हुई। 1951-60 वाले दशक में जनसंख्या में वृद्धि की दर 21.5 प्रतिशत अथवा 2.2 प्रतिशत वार्षिक थी जबकि 1961-70 तथा 1971-80 वाले दशक में इसमें 24.6 प्रतिशत यानि वार्षिक 2.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 1981-90 वाले दशक में जनसंख्या में 21.5 यानि 2.15 प्रतिशत वृद्धि हुई। मूल्य में वृद्धि विशेषतया खाद्य वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि का एक मुख्य कारण बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण खाद्यान्नों की माँग में वृद्धि का कारण है।

(2) मध्यवर्ती एवं पूँजीगत वस्तुओं के क्षेत्र में विनियोग की ऊँची दर :- High rate of Investment in intermediate and Capital goods Sector

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में आर्थिक विकास का विशाल कार्यक्रम आरंभ करने पर भारी विनियोग करना पड़ता है। उदाहरण के लिए 1951 से 1960 के दशक में कुल 10,000 करोड़ रुपये का विनियोग किया गया था जिसमें सरकारी क्षेत्र में 5200 करोड़, एवं निजी क्षेत्र में 4800 करोड़ रुपये का विनियोग था। तीसरी योजना तथा तीन एक वर्षीय योजनाओं में सरकारी क्षेत्र में 15200 करोड़ रुपये का विनियोग हुआ। चौथी, पाँचवीं, छठी एवं सातवीं योजना में सबसे अधिक विनियोग में वृद्धि हुई।

(3) बढ़ता हुआ सरकारी व्यय (Mounting public expenditure)

पिछले दो दशक में सरकारी व्यय में भारी एवं निरंतर वृद्धि हुई। सरकारी व्यय से सामान्य जनता की आय उत्पन्न होती है अतः इसकी वृद्धि का अर्थ आय में वृद्धि और आय में वृद्धि से वस्तुओं की माँग में वृद्धि होती है। इस तरह भारत में मूल्य वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण बढ़ता हुआ सरकारी व्यय है। 1950-51 से 1991-92 तक 200000 करोड़ रुपये सरकारी व्यय यानि 42 वर्षों में इसमें 260 गुणा वृद्धि हुई।

P.T.O.

Scanned by CamScanner

(4) घाटे का वित्त व्यवस्था (Deficit financing)

सरकार द्वारा आर्थिक विकास की योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए घाटे का वित्त प्रबंध भी मूल्य स्तर पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। पंचवर्षीय योजनाओं के प्रारंभ से सरकार ने घाटे की वित्त व्यवस्था को बड़े पैमाने पर अपनाया। उदाहरण के लिए प्रथम योजना में 420 करोड़ रुपये, दूसरी योजना में 954 करोड़ रुपये तीसरी योजना में 1130 करोड़ रुपये, तीन एक वर्षीय योजना में 676 करोड़ रुपये तथा चतुर्थ योजना में 2060 करोड़ रुपये प्राप्त किया गया था। आशय यह है कि घाटे की वित्त व्यवस्था द्वारा प्रथम योजना में 420 करोड़ रुपये की प्राप्ति हुई थी। और बढ़कर सातवीं योजना की अवधि में वार्षिक 28200 करोड़ रुपये की हो गई। अत्यधिक घाटे की वित्त व्यवस्था से भी मूल्य वृद्धि की प्रवृत्ति को बल मिलता है

(5) मुद्रा की पूर्ति में अत्यधिक वृद्धि (Excessive increase in the money Supply) जनता के पास मुद्रा की पूर्ति में तीव्र वृद्धि भी मूल्यों के बढ़ने का एक प्रधान कारण है। जनता के पास मुद्रा की पूर्ति में चलार्थ (Currency notes) नोट और सिक्के तथा बैंक मुद्रा दोनों का ही समावेश रहता है।

(6) वस्तुओं की पूर्ति में तदनुरूप वृद्धि का अभाव (lac of a corresponding increase in the supply of commodities) उपरोक्त कारणों से मूल्य तल में वृद्धि होती है, किन्तु यदि इसके साथ वस्तुओं की पूर्ति में वृद्धि हो तो इसका मूल्य तल पर प्रायः कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(7) काले धन का कुप्रभाव - (Adverse role of black money)

वर्तमान समय में मूल्य तल में वृद्धि के लिए काला धन भी बहुत हद तक उत्तरदायी है। वर्तमान समय में समाज में बहुत अधिक काला धन का संचय है। इस धन के कारण देश में एक समानान्तर अर्थव्यवस्था (parallel economy) का निर्माण हो गया है

(8) आय में अत्यधिक वृद्धि (Excessive increase in Income) योजना की अवधि में बहुत से लोगों को मुख्यतः उन लोगों को जिन्हें योजनाकाल में रोजगार प्राप्त हुआ, आय में अत्यधिक वृद्धि हुई। द्वितीय योजनाकाल के प्रारंभ से ही देश में आधारभूत एवं भारी उद्योगों का द्रुतगति से विकास

P.T.O

Scanned by CamScanner

जिसमें लाखों लोगों को रोजगार मिला।

(9) अपर्याप्त कृषि एवं औद्योगिक उत्पादन :- कृषि एवं उद्योगों के उत्पादन में भी नियोजन की अवधि में हुई वृद्धि निरंतर नहीं थी, जिससे मूल्य तल में वृद्धि को अनावश्यक रूप से प्रश्रय मिला। प्रथम एवं द्वितीय पंचवर्षीय योजना में कृषि के उत्पादन में 22 प्रतिशत की वृद्धि हुई, किन्तु तृतीय पंचवर्षीय योजना में इसमें एक प्रतिशत की कमी हुई।

(10) जमाखोरी एवं सट्टे की प्रवृत्ति :- मूल्य वृद्धि में जमाखोरी तथा सट्टेबाजी का हाथ भी कम महत्वपूर्ण नहीं रहा है। ज्यों हि मूल्य तल में वृद्धि होती है वैसे ही बड़े-बड़े व्यवसायी एवं सट्टेबाज बाजार में वस्तुओं की कृत्रिम कमी उत्पन्न करते हैं। ये वस्तुओं का स्टॉक दबाकर रखके लगाते हैं इससे मूल्य तल की वृद्धि को अधिक प्रोत्साहन मिलता है।

(11) नियंत्रित एवं प्रशासित मूल्यों में वृद्धि :- Rise in administered prices) पिछले कुछ वर्षों से राजकीय उपक्रम भी अपने मूल्यों में लगातार वृद्धि कर रहे हैं। उदाहरण के लिए पिछले कुछ वर्षों से भारतीय रेलों ने अपने भाड़े तथा किराये में बहुत अधिक वृद्धि की है जिससे अन्य वस्तुओं के मूल्य तल में वृद्धि हुई है।

(12) पेट्रोलियम के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि (Big hike in oil price)

सितम्बर 1973 में कच्चे तेल के मूल्य में 130 प्रतिशत की वृद्धि की गयी। भारत सरकार ने भी तेल के मूल्य में आये दिन बिना सोचे समझे बहुत अधिक वृद्धि की जिससे मुद्रा स्फीति की समस्या गम्भीर हो गयी। अकेले 1990-91 में तेल के मूल्यों में 50% की वृद्धि की गयी।